B.A. III Hons II paper

शैलेन्द्र राज्य का पतन

द० पू० ए० के प्राचीन इतिहास में शैलेन्द्र साम्राज्य का स्थान अत्यन्त महत्व का है। इसे इस क्षेत्र को गुप्त साम्राज्य कहा जाता था। परन्तु शैलेन्द्र वंश के प्रतापी सम्राटों का क्रमबद्ध वृतान्त अब तक उपलब्ध नहीं हो सका है। उनके विषय में जो भी जानकारी हमें है वह अत्यन्त अस्पष्ट और अपर्याप्त है।

12 वीं शदी में शैलेन्द्र साम्राज्य निसका से प्रगति हुई, यह सुनिश्चित रूप से प्रतिपादित करना सम्भव नहीं। लेकिन 1264 के पश्चात् सान फो-त्सी (श्री विजय) का तेजी से पतन होने लगा। पाण्ड्य आक्रमण के कारण भी स्थिति उत्पन्न हो गई थी, जावा के राजा कृतनगर ने इसका लाभ उठाया। मलाया प्रायद्वीप पर आक्रमण कर इसने पहंग जीत कर फिर मलयु (जाम्बी) को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया।

मलाया पर कृतनगर का प्रभुत्व ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रहा, पर मलयू के जिस राज्य पर से सान फो-त्सी के प्रभुत्व का अन्त राजा कृतनगर द्वारा किया था, वह अपनी स्वतंत्रता को कायम रखने में समर्थ रहा और वह सान-फो-त्सी का प्रतिद्वन्दी बन गया।

13वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में सियाम के थाई-लोगों ने भी उत्तर की ओर से मलाया प्रायःद्वीप पर आक्रमण कर दिए गए। जावा, मलायू और सियाम के बीच में निरन्तर संघर्ष होता रहा। सान फो-त्सी वह एक स्थानीय राज्य-मात्र रह गया। 1377 ई० तक यही स्थिति कायम रही जबकि जावा में एक बार फिर संघर्ष हुआ जिससे पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। इस प्रकार निरन्तर युद्ध और आपसी मतभेद के कारण श्री-विजय (सान-फो-त्सी) एक शक्तिशाली राज्य का अन्त हुआ जिसकी स्थापना शैलेन्द्रवंश के राजाओं द्वारा की गई थी।

शैलेन्द्र साम्राज्य के पतन का विवरण देते हुए दो अन्य बातों का उल्लेख करना भी आवश्यक है। 8वीं शदी तक जावा भी इस

साम्राज्य के अन्तर्गत था, पर बाद में यहाँ ऐसे राज्यों की स्थापना हुई, जो न केवल श्री विजय की अधीनता स्वीकार नहीं करते थे, बल्कि उसके विरुद्ध संघर्ष भी होते रहते थे।

शैलेन्द्र वंश के किसी राजा का सुनिश्चित रूप से पता नहीं मिलता। श्री लंका पर सान-फो-त्सी या जावक के जिस राजा चन्द्रभानु ने आक्रमण किया था, चैया के एक अभिलेख में उसके कुल को कमल से प्रादुर्भूत कहा गया है सान-फो-त्सी ताम्रलिंग का अधिपति था। तन-म-लिंग उन पन्द्रह राज्यों में एक है उल्लेख चाऊ-ज-कुआ ने सान फो-त्सी के अधीनस्थ राज्यों के रूप में किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द्रभानु उस तन-म-लिंग या ताम्रलिंग का राजा था उसने सान-फो-त्सी के शैलेन्द्रवंशी राजाओं के विरुद्ध विद्रोह कर अपनी शक्ति को बढ़ लिया था। और यह स्वर्ण द्वीप के क्षेत्र में वही सर्वप्रधान स्थिति प्राप्त कर लिया।

अतः उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि शैलेन्द्र अपने साम्राज्य का अन्तिम शासक था और उसके बाद के वंशावलीओं का ज्ञान नहीं मिलता है। चीनी स्रोतों द्वारा यह भी प्रमाणित हो जाता है कि सान-फो-त्सी नामक राज्य कई शताब्दीयों तक कायम रहा। सान-फो-त्सी तथा उसके अधीन राज्यों का वृतान्त 12 वीं शताब्दी में चाऊ-ज-कुआ ने दिया है। अधिकतर विद्वानों ने सान-फो-त्सी को श्री विजय से नामकरण किया है। 14 वीं शताब्दी के अन्त में उस राज्य का वृतान्त मिलता है। शैलेन्द्र राज्य के पतन के बाद शैलेन्द्र के स्थान पर अब श्री विजय का उत्कर्ष आरम्भ होता है।